भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर

प्रश्न बैंक : कक्षा-दसवीं कविता - **आत्मत्राण** कवि - रवींद्रनाथ ठाकुर

1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर: कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। वह यह चाहता है कि वह हर मुसीबत का सामना खुद करे। भगवान उसे केवल इतनी शक्ति दें कि मुसीबत में वह घबरा न जाए। वह भगवान से केवल आत्मबल चाहता है और स्वयं मेहनत करना चाहता है। वह कामना करता है कि भले ही ईश्वर उसे दैनिक जीवन की विपदाओं को दूर करने में मदद न करे, परंतु वह अपने प्रभु से इतना अवश्य चाहता है कि वह इन विपदाओं से घबराए नहीं और इन पर विजय प्राप्त कर सके । वह अपने बल-पौरुष पर भरोसा करता है । वह प्रभु से अच्छे स्वास्थ्य की प्रार्थना करता है, प्रभु उसे इतना निर्भय बना दे कि वह जीवन-भार को आसानी के साथ वहन कर सके । कवि चाहता है कि प्रभु के प्रति उसकी आस्था अडिग बनी रहे और किसी भी परिस्थिति में वह उन पर संदेह न करे ।

2. 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं' - कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर: इस पंक्ति में कवि ने यह बताया है कि वह यह नहीं चाहता कि भगवान आकर उसकी मदद करें। वह भगवान को किसी भी काम के लिए परेशान नहीं करना चाहता अपितु स्वयं हर चीज़ का सामना करना चाहता है। कवि का तात्पर्य यह है कि वह ईश्वर से यह विनती नहीं करना चाहता कि वे उसे संकटों से बचाए रखें । वह तो मात्र यह चाहता है कि प्रभु उसे ऐसा आंतरिक बल दें कि वह किसी भी कठिन समय में विचलित न हो । प्रभु उसे सहनशीलता, धैर्य तथा बल अवश्य प्रदान करें, ताकि वह किसी भी कष्ट और संकट से उबर पाए, उसे सहन कर पाए । किसी भी परिस्थिति में उसका मन विचलित न हो । कठिन-से-कठिन समय में भी, ईश्वर के प्रति उसके विश्वास और श्रद्धा में कमी न आए ।

3. कवि किसी सहायक पर निर्भर न रहने की बात क्यों कहता है?

उत्तर: कवि सहायक पर निर्भर न रहने की बात कहता है क्योंकि वह आत्मविश्वासी है । वह आत्मनिर्भर बनकर अपने बल-पौरुष पर विपदाओं को चुनौती देने में विश्वास करता है । जब किसी काम में उसे किसी की मदद न भी मिले तो भी उसका पुरुषार्थ अडिग रहना चाहिए।

4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?

उत्तर: कवि रवींद्रनाथ ठाकुर सुख के दिनों में भी प्रभु का स्मरण बनाए रखना चाहते हैं, जबकि सामान्य व्यक्ति दुख की घड़ी में ही परमात्मा का स्मरण करते हैं और सुख प्राप्त होने पर ईश्वर को भूल जाते हैं । कवि सुख-दुख को समभाव से वहन करने हेतु ईश्वर की कृपा-दृष्टि चाहते हैं ।

अंत में कवि की अनुनय है कि जब मेरे दिन बहुत बुरे चल रहे हों और पूरी दुनिया मुझ पर उँगली उठा रही हो, तब भी ऐसा न हो कि मैं तुम पर कोई शक करूँ। इस तरह से कवि भगवान से यह भी अनुरोध करता है कि चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ क्यों न आ जाएँ, उसका विश्वास भगवान पर हमेशा बना रहे।

5. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आत्मत्राण का मतलब है - अपने आप को किसी भी स्थिति में ऊपर उठाना। इस कविता में कवि ने अपने सब कार्य स्वयं करने की बात की है। भगवान से मदद के नाम पर वह केवल इतना चाहता है कि भगवान उसके मनोबल को बढ़ाए रखें। दूसरे शब्दों में, अपनी सभी ज़िम्मेदारियाँ वह स्वयं ही निभाना चाहता है। इसलिए 'आत्मत्राण' शीर्षक इस कविता के लिए बिलकुल सही है।

6. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

उत्तर: अधिकतर प्रार्थनाओं में भगवान से कुछ-न-कुछ माँगा जाता है, उनसे अपने दुखों और कष्टों को दूर करने की प्रार्थना की जाती है । उनसे विपत्तियाँ न देने की प्रार्थना की जाती है और केवल सुख-ही-सुख माँगे जाते हैं । इसके अलावा भगवान के रूप और उसकी शक्तियों की प्रशंसा की जाती है। इस कविता में कवि ने भगवान से ऐसा कुछ भी नहीं माँगा है। साथ ही वे भगवान की बिना मतलब की तारीफ़ों के पुल भी नहीं बाँध रहे हैं। वे जीवन की सभी कठिनाइयों और समस्याओं को स्वयं स्वीकार करने के लिए तैयार हैं । वे ईश्वर से केवल सहनशक्ति की अपेक्षा करते हैं । वे निर्भय होकर अपने साहस को बनाए रखना चाहते हैं और ईश्वर से इसी बात की प्रार्थना करते हैं ।

7. 'आत्मत्राण' कविता में कवि की प्रार्थना से क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर: 'आत्मत्राण' कविता के माध्यम से कवि मानव मात्र को संदेश देना चाहते हैं कि हमें ईश्वर से दुखों से छुटकारा पाने की बजाय उन दुखों को सहन करने की शक्ति माँगनी चाहिए । मनुष्य को कभी भी विषम परिस्थितियों को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि अगर हानि भी उठानी पड़े तो मन में रोष नहीं करना चाहिए । कवि ईश्वर से संकट के समय भय-निवारण करने की शक्ति प्रदान करने को कहते हैं । कविता के माध्यम से कवि आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश तो देते ही हैं, साथ ही यह भी सीख देते हैं कि मनुष्य को सुख के क्षणों में भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए, उसे याद करके उसके समक्ष विनय भाव प्रकट करना चाहिए । उससे निडरता, शक्ति और आस्था का वरदान लेना चाहिए । अगर दुख में कोई सहायक न मिले तो भी मनुष्य को अपना बल-पौरुष नहीं डगमगाने देना चाहिए तथा ऐसी स्थिति में भी प्रभु पर से विश्वास कम नहीं होना चाहिए ।

8. 'आत्मत्राण' कविता में कवि यह क्यों नहीं चाहता कि प्रभु ही उसकी विपत्तियों को दूर करें ?

उत्तर: 'आत्मत्राण' कविता का कवि यह जानता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और सब कुछ करने में समर्थ है, तथापि वह उनसे अपने जीवन की विपत्तियों को दूर करने का अनुरोध नहीं करता, बल्कि उनसे निर्भयता, आत्मबल, संयम व विवेक जैसे गुण माँगता है, ताकि जीवन में आने वाली विपत्तियों का सामना स्वयं करके वह उन्हें अपने अनुकूल बना सके ।

9. 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी स्वयं से क्या अपेक्षा करता है ?

उत्तर: 'आत्मत्राण' कविता में चारों ओर से दुखों से घिरने पर कवि परमेश्वर में विश्वास करते हुए भी स्वयं से यह अपेक्षा करता है कि ऐसे समय में उसके मन में इतना संयम, विवेक व धैर्य हो कि वह उनके अस्तित्व पर ज़रा-सा भी संदेह न करे अर्थात् उसके मन में प्रभु के प्रति पहले के समान श्रद्धा बनी रहे । यही वह प्रभु से माँगता भी है ।

10. "विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं" - कवि रवींद्रनाथ ठाकुर इस काव्य-पंक्ति में ऐसा क्यों कहते हैं ?

उत्तर: कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने कविता में ऐसा इसलिए कहा है कि वे विपदाओं का सामना धैर्य व साहसपूर्वक करना चाहते हैं । वे आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं । वे निडर होकर ईश्वर से कहते हैं कि ईश्वर भले ही उन्हें विपदाओं से न बचाए, परंतु विपदाओं से लड़ने की उन्हें शक्ति दे ।

****